26/07/2020

PHILOSOPHY (Hons)
Paper VIII

Ajeet Kumar
Assistant Professor, C.M.J College.

Mysticism

रहस्यवाद लगभग सभी धर्मों में पाया गया है। इवलिन के अनुसार रहस्यवादी अनुभूति को परिभाषित करना कठिन है और उसके महत्व के मूल्यांकन के विभिन्न और परस्पर विरोधी प्रयत्न किए गए हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि रहस्यवादी अपनी उन अनुभूतियों के विवरण के लिए जिनके रहस्यानुभूति शब्द है विरोधाभासपूर्ण, आलंकारिक और काव्यात्मक भाषा का इस्तेमाल करते रहे हैं यह भी ~~कहते~~ हैं। आश्चर्यजनक भी नहीं है उदाहरण के तौर पर रहस्यवादियों द्वारा यह दावा भी किया गया है कि ईश्वर और विश्व एक हैं और यह भी कि ईश्वर और विश्व एक नहीं है

जाती ... तर्कवाक्य और

तक पहुंचने के लिए कई रास्ते हो
सकते हैं और उन्हीं रास्तों द्वारा
अलग तर्कवाक्यों को भी पहुँचा जा
सकता है उदाहरण के तौर पर किसी
व्यक्ति को अपने में निज तर्क-
वाक्य का ज्ञान हो सकता है उदाहरण
के तौर पर किसी व्यक्ति को उसकी
सत्यता का स्पष्ट प्रमाण नहीं हो
सकता है ठीक यही बात रहस्यानु-
भूति के साथ भी है, किसी
तर्कवाक्य का ज्ञान रहस्यानुभूति द्वारा
हुआ है, इसे अपने-आप में उसकी
सत्यता प्रमाण नहीं माना जा सकता
है स्मृति और आस्था की तरह
रहस्यानुभूति के आधार पर भी
परस्पर विरोधी दावे किए जाते हैं
कुछ रहस्यवादियों के अनुसार इससे
निर्गुण ब्रह्म का ज्ञान मिलता है
जबकि कुछ अन्य के अनुसार
सगुण ईश्वर का। हिन्दू और
बौद्ध रहस्यवादि अपनी रहस्यानुभूति
को आत्मा से नहीं जोड़ते हैं।